ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-1, No.-1, PP-180-186,YEAR-2013

जनसंख्या की गत्यात्मकता
(कुशीनगर के विशेष सन्दर्भ में)

❑ डॉ0 ज्योत्स्ना पाण्डेय

जनसंख्या विश्लेषण में क्षेत्रीय विविधताओं के अतिरिक्त उसकी विशेषताओं का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है। जनसंख्या के विभिन्न गुणात्मक एवं परिणामात्मक विशेषताओं का प्रभाव किसी क्षेत्र विशेष के सामाजिक एवं आर्थिक भूदृश्य पर पड़ता है। वर्तमान में विभिन्न राजनैतिक एवं सामाजिक कारकों में परिवर्तन का प्रभाव मानव के व्यक्तिगत जीवन मूल्यों, सोच–समझ परिवार तथा अन्य सामाजिक इकाईयों के आकार एवं जीवन स्तर में व्यापक परिवर्तन के रूप में दिखाई देता है। अतः भौगोलिक विश्लेषण में जनसंख्या गत्यात्मकता का विशेष महत्व है। किसी क्षेत्र में एक निर्धारित अवधि के अन्तर्गत निवास करने वाले लोगों की संख्या में परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि कहते है। अतः जनसंख्या गत्यात्मकता के अन्तर्गत जनसंख्या वृद्धि का विशेष महत्व है, क्योंकि अन्य जनांकिकीय तत्व भी इससे सम्बन्धित होती है। जनसंख्या वृद्धि में धनात्मक एवं ऋणात्मक परिवर्तन जनसंख्या गत्यात्मकता का परिचायक है। जनसंख्या वृद्धि जैविक क्रिया का प्रतिफल होती है। यह जन्मदर, मृत्युदर एवं प्रव्रजन से प्रभावित होती है।

विकासशील देशों की तरह भारत में भी जनसंख्या वृद्धि दर अत्यन्त उच्च बनी हुई है। अध्ययन क्षेत्र गंगा के उपजाऊ मैदान में स्थित है जहाँ तीव्र जनसंख्या वृद्धि की स्थिति पायी जाती है।षोडष महाजनपदों में से एक मल्ल राजाओं की राजधानी कुशीनगर ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्यन्त प्राचीन विशेषताओं को समेटे हुए है। शांति व अहिंसा के वाहक भगवान बुद्ध तथा महावीर स्वामी के पुण्य निर्वाण स्थली के रूप में विश्वविख्यात है। यह जनपद अनेक सांस्कृतिक, सामाजिक व राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है। कुशीनगर जनपद 26°18′ उ0 अक्षांश तथा 83°33′ पूर्व से 84°36′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है जो उत्तर प्रदेश की पूर्वी सीमा को सुनिश्चित करती है तथा गोरखपुर मण्डल में स्थित है।

जनपद कुशीनगर में दशकीय जनसंख्या वृद्धि सारिणी (1) प्रदर्शित करती है कि जनपद की जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। अध्ययन क्षेत्र कसया जो कुशीनगर में स्थित है, का नगरीय केन्द्र के आधार पर जनसंख्या वृद्धि की तुलना तथा विभिन्न दशकों की गत्यात्मकता का अध्ययन किया गया है। उत्तर प्रदेश की जनसंख्या वृद्धि दर 1951 से लेकर अब तक 2001 निरन्तर वृद्धिमान रही है, परन्तु भारत की जनसंख्या वृद्धि दर के सन्दर्भ में यह स्थिति 1971 तक की रही है। 1981, 1991 तथा 2001 की जनगणना में सामान्य कमी हुई है। जनपद कुशीनगर की जनसंख्या वृद्धि दर में निरन्तर वृद्धि अंकित की गयी है, परन्तु 1991 की तुलना में 2001 की जनगणना में अपेक्षाकृत कम वृद्धि हुई है, जो निश्चित रूप से विकास के लिए अच्छा संकेत है।

सारिणी–1
प्रति दस वर्ष में जनसंख्या वृद्धि

[illegible]	[illegible]						[illegible]		
	[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]			
1951	[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]
1961	[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]
1971	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
1981	[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]
1991	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
2001	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

रीडर भूगोल विभाग, श्री भगवान महावीर पी0जी0 कालेज, फाजिलनगर, कुशीनगर, (उ0प्र), भारत

POPULATION GROWTH (%)

सारणी–3

जनसंख्या वृद्धि प्रतिशत(जनपद) कुशीनगर

Ø0 l 0	fodkl [k.M	1981&1991	1991&2001	2001&2008
1	i Mjksuk Nxj dks"k	37-28	18-79	13-81
2	dl ;k Nxj dks"k	43-85	30-93	28-81
3	gkVk Nxj dks"k	37-66	20-66	12-61
4	l ejgh Nxj dks"k	37-60	16-14	13-12
5	[kM~Mk Nxj dks"k	9-79	42-42	40-01
6	jkedksyk Nxj dks"k	25-38	13-54	9-81
7	dirkuxt Nxj dks"k	24-0	20-67	19-81

श्रोतः सांख्यिकी 2008 कुशीनगर

POPULATION DENSITY (/Km2)

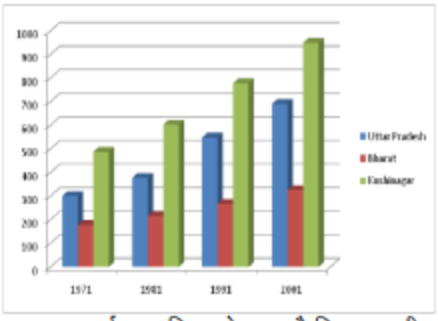

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि भारत की सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि दर 1971 की जनगणना में दर्ज की गयी, जबकि उत्तर प्रदेश में 2001 की जनगणना सर्वाधिक वृद्धि दर को दर्शाता है। भारत में 21.34 प्रतिशत तथा उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक वृद्धि दर 25.80 प्रतिशत (2001) था। कुशीनगर में भी 1981–91 के दशक में सर्वाधिक वृद्धि दर में 28.16 प्रतिशत जो 2001 में 28.12 प्रतिशत हो गया। उत्तर प्रदेश भारत का सर्वाधिक जनसंख्या वाला प्रदेश है। कुशीनगर उत्तर प्रदेश का सघन जनसंख्या वाला जनपद है।

जनपद कुशीनगर की जनसंख्या का विकास खण्डवार स्तर पर दशकवार विवरण सारणी–2 के अनुसार जनसंख्या में तीव्र वृद्धि देखा जा रहा है। जो 1961 (देवरिया के अन्तर्गत था) की तुलना में 1991 में लगभग दोगुनी हो गयी। अर्थात तीस वर्षो में जनसंख्या में दोगुना वृद्धि हुई। यद्यपि विभिन्न विकास खण्डों के सन्दर्भ में इस स्थिति में थोड़ा बहुत अन्तर मिलता है।

इन तीस वर्षो में चार विकास खण्ड विशुनपुरा, पडरौना, कसया व सेवरही की जनसंख्या दोगुनी हो गयी, जबकि अन्य विकास खण्डों में अपेक्षाकृत मध्यम वृद्धि प्रतिशत रहा है। इसी प्रकार 2001 में जनपद की जनसंख्या में 1961 की तुलना में ढाई गुनी वृद्धि दर के कारण जनपद में जनसंख्या आकार में तीव्र वृद्धि हुई है।

सारणी–2 के अनुसार 1971 की जनगणना में जनसंख्या वृद्धि दर 18.40 प्रतिशत थी, जिसमें विकास खण्डवार भिन्नता पाई जाती है। 1971 में आठ विकास खण्ड ऐसे थे जिनकी जनसंख्या वृद्धि दर जनपद की जनसंख्या वृद्धि दर से नीची थी, जिसमें अध्ययन क्षेत्र कसया में भी 17.08 प्रतिशत था। किन्तु छः विकास खण्ड की जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत जनपदीय औसत 18.40 से अधिक रहा।

1981 की जनगणना में जनपद की जनसंख्या 24.59 प्रतिशत की दर से बढकर 1731008 हो गयी। इस समय आठ विकास खण्ड की जनसंख्या वृद्धि दर जनपदीय औसत से नीचे थी, जबकि कसया सहित छः विकास खण्डों की जनसंख्या वृद्धि दर जनपदीय औसत से अधिक थी। कसया में 29.93 प्रतिशत वृद्धि हुई, जो प्रादेशिक वृद्धि दर (25.49:) तथा राष्ट्रीय औसत (24.66:) से भी उच्च थी। जनपद के 14 विकास खण्डों में उच्चतम वृद्धि प्रतिशत कसया में ही था।

सारणी–2

कुशीनगर जनपद की जनसंख्या वृद्धि दर (% में)

Øe0la	fodkl {k.M dk uke	1971	1981	1991	2001
1	[illegible]	18.40	24.6	30.4	
2	[illegible]			26.4	
3	[illegible]		18.4	23.3	
4	[illegible]		17.3	21.4	
5	[illegible]	15.30	18.4	23.3	
6	[illegible]	17.10	20.45	30.13	
7	[illegible]			19.89	
8	[illegible]			20.12	
9	[illegible]			20.04	
10	[illegible]	15.94	20.35	30.18	
11	[illegible]	17.08	22.42	32.12	
12	[illegible]			20.04	
13	[illegible]			19.12	
14	[illegible]			21.34	

1991 जनपद की जनसंख्या वृद्धि दर में तीव्र वृद्धि होते हुए 29.14 प्रतिशत हो गया, जिससे 1731008 (1981) जनसंख्या बढ़कर 2235505 हो गई। इस दशक में छः विकास खण्ड की जनसंख्या वृद्धि दर जनपद के औसत से उच्च थी, जिसमें कसया में 32.12 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस दशक में भी अध्ययन क्षेत्र कसया की जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत प्रादेशिक औसत 25.55 तथा राष्ट्रीय औसत 23.86 से ऊपर था।

2001 की जनगणना में जनपद में लगातार वृद्धि प्रतिशत बढ़ते हुए सर्वोच्च जनसंख्या वृद्धि दर भी इस दशक में सर्वोच्च रही। चार विकास खण्डों की जनसंख्या वृद्धि दर जनपदीय औसत से अधिक थी, जिसमें कसया में वृद्धि दर 55.39 प्रतिशत रहा जो जनपद में उच्चतम स्तर था, जबकि राष्ट्रीय औसत मात्र 21.34 प्रतिशत ही रहा। इस प्रकार 1971 से लेकर 2001 तक पडरौना तथा कसया दो ऐसे विकास खण्ड रहे जिनमें जनसंख्या वृद्धि दर जनपदीय औसत से लगातार अधिक रहा।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि जनपद कुशीनगर तीव्र जनसंख्या वृद्धि दर से गुजर रहा है। जिसमें अध्ययन क्षेत्र कसया की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। कसया में 1971 में जहाँ जनसंख्या वृद्धि दर 17.08 था, लगातार बढ़ते हुए 2001 में 55.39 प्रतिशत हो गया है। अर्थात तीन गुना प्रतिशत वृद्धि हुई। जबकि स्वतंत्रता के समय जनपद की जनसंख्या वृद्धि दर देश व प्रदेश दोनों की तुलना में कम थी, जिसका प्रमुख कारण स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी के साथ–साथ जीवन स्तर निम्न होना है।

1971 में भारत का घनत्व 177 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 तथा प्रदेश में 300 व्यक्ति, किन्तु जनपद कुशीनगर में 487 वर्ग किमी0 था। जो 1981 में क्रमशः 216, 377 तथा 602 हो गया। सारणी–1 को देखने से पता चलता है कि घनत्व में लगातार वृद्धि हुई है। जनपद का घनत्व देश व प्रदेश दोनों की तुलना में तेजी से बढ़ा है। 1991 में जहाँ देश में 267, प्रदेश में 548 तथा जनपद में 778 था, 2001 में बढ़कर क्रमशः 325, 690 तथा 949 हो गया।

पिछले पाँच हजार वर्षो से नगर मानव की सृजनात्मक विचारधारा का परिणाम माना जाता है। इसलिए नगर शब्द सभ्यता का पर्यायवाची शब्द माना जाता है। वास्तव में बिना नगरों के किसी मानवीय संस्कृति, क्षेत्र, समाज या समुदाय को सभ्य कहना कठिन है। ग्रामीण अधिवास से नगरों के रूप में कायान्तरण के परिणामस्वरूप ग्रामीण अधिष्ठानों व्यवसाय एवं अर्थव्यवस्था, क्षेत्र या भूमि उपयोग समाज एवं संस्कृति, जीवन, रहन–सहन का स्तर एवं दूसरे मानव मूल्यों में गुणात्मक एवं मात्रात्मक परिवर्तन स्पष्ट दिखाई देने लगता है। नगरीय जनसंख्या से तात्पर्य कुल जनसंख्या में कितने प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती है। 1950 से अब तक विश्व की नगरीय जनसंख्या तीन गुनी बढ़ी है। इसी तरह विकासशील तथा अल्प विकसित देशों में अपेक्षाकृत अधिक तीव्र गति से नगरीय जनसंख्या में वृद्धि हुई। 1920 से 1980 के बीच इस गुना वृद्धि हुई। विकासशील देश विशेषकर भारत के सन्दर्भ में हम पाते है कि नगरीकरण में तीव्र वृद्धि है, 1951 में जहाँ मात्र 17.9 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय थी, 2001 में बढ़कर 27. 81 प्रतिशत हो गयी। किन्तु दूसरी तरफ बढ़े नगरों की जनसंख्या वृद्धि छोटे नगरों की अपेक्षा तीव्र रही।

वास्तव में नगरीकरण किसी भी समाज एवं आर्थिक तन्त्र के सामयिक एवं क्षेत्रीय दोनों प्रकार संगठन तथा कार्यस्वरूप में हो रहे विभिन्न प्रकार के परिवर्तन का कारक होता है। किन्तु कार्यात्मक अन्तर्प्रक्रिया के अभाव में नगरीकरण प्रायः विनाशकारी होता है (डेविस)। जैसे भारत में महानगरीकरण तो हुआ परन्तु इन महानगरों में जनसंख्या के अनुरूप

नगरीय कार्य उपलब्ध नहीं है। जिसका प्रभाव नगर में रहने वाली जनसंख्या के जीवन गुणवत्ता पर पड़ा है। साथ ही वातावरण की गुणवत्ता भी प्रभावित हुई है, जिससे अनेक प्रकार की समस्या जैसे आवासीय समस्या, मलिन बस्ती, पेयजल की समस्या, कूड़ा–कचरा निस्तारण, जल जमाव, वायु, ध्वनि एवं जल प्रदूषण तथा सामाजिक प्रदूषण आदि विकराल रूप में नगरीकरण के वास्तविक स्वरूप को चिढ़ाने का काम करती है। इसी सन्दर्भ में डॉ0 जगदीश सिंह ने भारत में नगरीकरण को छद्म नगरीकरण की संज्ञा दी है।

अध्ययन क्षेत्र कसया (कुशीनगर) देश के नगरीकरण का स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। जहाँ मात्र 4.56 प्रतिशत (2001) जनसंख्या नगरों में रहती है फिर भी इस छोटे नगर में जनसंख्या का जीवन स्तर अत्यन्त निम्न है। सारणी–3 के आधार में 1971 में भारत में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 23. 3 था, उत्तर प्रदेश में 14.02: था जबकि जनपद में 3. 2: था। 1981 में भारत में नगरीकरण में तीव्र वृद्धि हुई किन्तु छोटे नगरों की जनसंख्या में आशातीत वृद्धि नहीं हुई। देश में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 25. 2 हो गया जबकि कुशीनगर में मात्र 4.2: जनसंख्या नगर में रहती थी।

1991 व 2001 में क्रमशः 26.0 व 27.8 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती थी, उत्तर प्रदेश में 19.89:, 20.78% जबकि जनपद में 1991 में 4.82 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में रहती थी। इस प्रकार लगभग 95.18 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती थी। जबकि जनपद में एक नगरपालिका परिषद और छः नगर पंचायतें थी। 2001 में ग्रामीण जनसंख्या 2759144 जो कुल जनसंख्या का 95.42 प्रतिशत तथा नगरीय जनसंख्या 132523 जो कुल जनसंख्या का 4.58 प्रतिशत है। इस प्रकार 1991 की तुलना में 2001 में नगरीय जनसंख्या में 0.24 प्रतिशत की कमी हुई। जबकि 1991 से 2001 के बीच में दशकीय वृद्धि नगरीय जनसंख्या में 21.44 प्रतिशत तथा ग्रामीण जनसंख्या में 28.44 प्रतिशत हुई। कुशीनगर के विभिन्न नगरीय केन्द्रों में भी कसया नगर पंचायत में अपेक्षाकृत तीव्र वृद्धि हुई। कसया में मैत्रेय प्रोजेक्ट तथा इन्टरनेशनल एयरपोर्ट की घोषणा के कारण लोगों का क्रेज बढ़ा है, जिससे आस–पास के गॉव के लोग आकर बस रहे हैं। उन्हें उम्मीद है कि यहॉं रोजगार के अवसर बढ़ेगे तथा उन्हें उच्च नगरीय जीवन मिलेगा।

स्त्री–पुरूष अनुपात– विकास का एक बड़ा सूचक स्त्री–पुरुष अनुपात है। भारत सहित कुछ राज्यों को छोड़कर (केरल, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश) लगभग सभी राज्यों में स्त्री–पुरुष अनुपात ठीक नहीं है। देश में यह अनुपात 933 प्रति हजार पुरूष, उत्तर प्रदेश में 898 प्रति हजार पुरूष तथा कुशीनगर में 963 प्रति हजार पुरूष है। 1901 में देश का लिंगानुपात 972 था, जिसमें क्रमिक ह्रास 1941 (945) तक रहा। 1951 में 946, 1981 में 934 अंक, 1991 में 927 तथा 2001 में 933 है। जबकि उत्तर प्रदेश में लिंग अनुपात हमेशा राष्ट्रीय स्तर से कम रही है। लिंगानुपात की दृष्टि से उत्तर प्रदेश देश के राज्यों में 26वें स्थान पर है। कुशीनगर प्रदेश में ग्यारहवॉं नगर है स्त्री–पुरूष अनुपात की दृष्टि से। कुशीनगर में 1981 में जहॉं यह अनुपात 958 था, 1991 में 940 तथा 2001 में 963 हो गया। यहॉं भी कसया नगर क्षेत्र में क्रमशः 838, 848 तथा 911 रहा। कुशीनगर के अन्य नगरीय क्षेत्रों में हाटा को छोड़कर कसया में अनुपात में आशातीत वृद्धि हुई। जो तालिका–6 से स्पष्ट है। कुशीनगर में कसया तथा पडरौना जिले के केन्द्र में स्थित नगरीय क्षेत्र है जहॉं जिले के विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले नौकरशाह मकाने किराये पर लेकर रहते हैं, जिनमें 30 से 40 प्रतिशत लोग ही परिवार के साथ रहते है। शेष अकेले ही रहते हैं, जिसका स्पष्ट प्रभाव अनुपात पर पड़ता है। दूसरी तरफ यदि सम्पूर्ण नगरीय क्षेत्र को देखें तो ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों की संख्या अधिक है। ग्रामीण क्षेत्र में 1981 में 996, 1991 में 943 तथा 2001 में 946 था, यद्यपि 1981 के बाद से यहॉं अनुपात में लगातार ह्रास हुआ है, जबकि नगरीय क्षेत्र में क्रमशः 850, 881 तथा 903 रहा। इन ऑंकड़ों से स्पष्ट है कि गॉव से नगरों की पुरुषों का पलायन तेजी से हुआ है जिसका मुख्य कारण रोजगार की

तलाश रही है। ये पुरूष वर्ग कम पढ़े–लिखे होते है जो निकट के शहरों में जाकर मजदूरी या ठेलों पर खाने पीने की वस्तुऐं बेचते है। रिक्सा चालक, धोबी, नाई जैसे छोटे स्तर की नौकरी करते हैं, अतः स्वयं अकेले ही रहते हैं। इनके परिवार के लोग गॉव में ही रह जाते हैं। कहीं न कहीं यह स्थिति न केवल इस क्षेत्र, नगर या राज्य बल्कि पूरे देश के विकास के नक्शे पर धब्बा है।

SEX RATIO IN URBAN CENTERS OF KUSHINAGAR

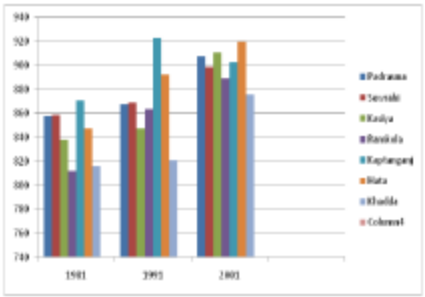

सारणी–4

साक्षरता / स्त्री–पुरूष अनुपात (1981–2001)

	1981		1991		2001	
ns'k@izns'k@uxj	L=h@1000 iq:"k	lk{kjrk %	L=h@1000 iq:"k	lk{kjrk	L=h@1000 iq:"k	lk{kjrk
Hkkjr	934		927	52.12	933	65.38
mÙkj izns'k	846		882	40.7	898	56.36
dq'khuxj	958	23.2	940	29.4	963	46.94
xzkeh.k	996	21.75	943	25.3	946	34.6
uxjh;	850	45.65	881	55.4	918	69.39

साक्षरता– साक्षरता निश्चित रूप से किसी क्षेत्र विशेष की सामाजिक, आर्थिक विकास की परिचायक है। साक्षरता विकास में भागीदारी का भी सूचक है। स्वतंत्रता के बाद 1951 में देश की औसत साक्षरता में साढ़े तीन गुना वृद्धि हुई, जबकि उत्तर प्रदेश में भी लगभग तीन गुना वृद्धि दर्ज की गयी। 1981 तक देश की औसत साक्षरता की तुलना में प्रदेश में धीमी वृद्धि हुई। 1991 में जहॉं प्रादेशिक स्तर पर 9% की वृद्धि हुई, वहीं पर देश में 13% वृद्धि हुई। यद्यपि कुल औसत साक्षरता 52.12% तथा उत्तर प्रदेश में मात्र 40.7%। इस अन्तर से स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश में विकास की गति धीमी रही है। 2001 में देश में साक्षरता प्रतिशत 65.38 तथा उत्तर प्रदेश में 56.36% रहा। यह प्रवृत्ति प्रदेश में पुरूष व महिला साक्षरता अनुपात में भी देखने को मिलता है। 1951 में महिला साक्षरता 4.1% था, 1981 में 16.70 तथा 2001 में मात्र 43% रहा। पुरूष साक्षरता 1981 में 46.7%, 1991 में 54.8% 2001 में 70.2% था। पिछले तीन दशकों में साक्षरता दर निश्चित रूप से बढ़ी है, किन्तु पुरूष महिला साक्षरता में अत्यधिक अन्तर 27.20% (2001) संतुलित विकास में बड़ी बाधा है। लगभग यही स्थिति अध्ययन क्षेत्र में भी देखने को मिलता है। कुशीनगर ग्रामीण बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण साक्षरता की वृद्धि में प्रदेश का चालीसवा जिला है।

वर्ष 2001 की जनगणना के आधार पर कुशीनगर में 46.94% साक्षरता है, जिसमें पुरूष 63.64 प्रतिशत तथा स्त्रियॉं 29.64 प्रतिशत साक्षर है। 1981 में मात्र 23.25% साक्षरता था, जिसमें तेजी से वृद्धि हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में 2001 में मात्र 34.6% साक्षरता थी, जबकि नगरीय क्षेत्र में 69.39% था। कसया (कुशीनगर) क्षेत्र में 39% (1981) साक्षरता बढ़कर 2001 में 70.73% हो गया जबकि पडरौना नगर क्षेत्र में 1981 में 46% से बढ़कर 2001 में 72.27% हो गया। यद्यपि नगरीय क्षेत्रों में विशेषकर अध्ययन क्षेत्र में साक्षरता में वृद्धि हुई है, किन्तु वास्तव में नगरीय क्षेत्र जहॉं साक्षरता का दर 90% से कम है, वहॉं विकास पर प्रश्नचिह्न लगना स्वाभाविक है। कहीं न कहीं जनता में जागरूकता में कमी क्षेत्र के विकास में बाधक है। (सारणी–5)। साथ ही पुरूष व महिला साक्षरता के अन्तर भी संतुलित विकास में बाधक हैं।

इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र कसया (कुशीनगर) में जनसंख्या गत्यात्मकता का अध्ययन कालिक एवं स्थानिक परिप्रेक्ष्य में किया गया है, जिसमें जनसंख्या की तीव्र वृद्धि, ग्रामीण व नगरीय जनसंख्या वृद्धि, स्त्री–पुरूष अनुपात तथा साक्षरता में साक्षरता में आये परिवर्तन का अध्ययन किया गया है। जनसंख्या के अनवरत वृद्धि से प्राकृतिक संसाधनों के साथ–साथ

जीवन स्तर की विभिन्न सुविधाओं जैसे रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा, खान–पान, रहन–सहन तथा मानव की उच्च आवश्यकताओं पर जनसंख्या का दबाव होना स्वाभाविक है। फलस्वरूप जनसंख्या (कार्यशील) स्थानान्तरण पर अंकुश लगाना सम्भव नहीं है। ऐसे में कार्यशील जनसंख्या की कमी क्षेत्र के विकास को और पीछे करने में ही सहायक होगी, जो न केवल क्षेत्र, प्रदेश बल्कि देश के विकास में भी बाधक है।

सारणी–5

कुशीनगर के नगरीय केन्द्रों में स्त्री–पुरूष अनुपात/साक्षरता

uxjh; dsUnz				lk{kjrk		
	1981	1991	2001	1981	1991	2001
iMjkSuk	858	868	908	46.0	54.41	72.7
lsojgh	859	869	899	41.0	51.23	70.55
dl;k ¼dq'khuxj½	838	848	911	39.0	50.80	70.73
jkedksyk	812	864	889	41.0	53.21	66.23
dIrkuxat	871	923	903	39.0	49.24	58.39
gkVk	848	893	920	38.0	43.12	70.69
[kM~Mk	816	821	876	36.0	49.08	61.19

सारणी–6

कुशीनगर में साक्षरता दर (%)

ns'k@izns'k@uxj	1981	1991	2001
Hkkjr	43.57	52.21	64.84
mÙkj izns'k	27.40	40.71	57.36
dq'khuxj	23.25	29.9	46.94
uxjh; ¼dq'khuxj½	43.45	55.9	69.39
xzkeh.k ¼dq'khuxj½	21.75	25.3	34.6
dl;k uxj {ks=	39.0	50.80	70.73

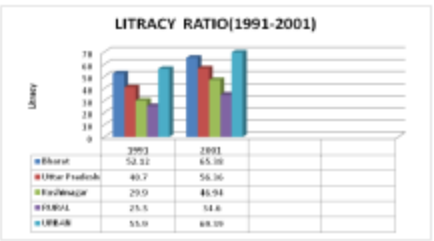

व्यावसायिक संरचना– भारत के सनातन मूल्यों का प्रहरी उत्तर प्रदेश गंगा जमुनी संस्कृति के कारण संयुक्त प्रान्त कहा जाता है। अत्यन्त उपजाऊ यह क्षेत्र कृषि की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। जिसमें स्थित कुशीनगर जनपद भी कृषि प्रधान जिला है। 2001 की जनगणना के आधार पर कुल मुख्य कार्यशील जनसंख्या 989351 है जिसमें 285698 कृषक है। जो कुल कार्यशील जनसंख्या का 28.87% है। कृषक मजदूर (157530) 24.3%, पारिवारिक उद्योग में 22642, व्यवसाय एवं अन्य कार्यों में लगे व्यक्तियों की संख्या 108638 अर्थात 10.98% है तथा सीमान्त कर्मकरों की संख्या 414843 है। इस प्रकार ऑकड़ों के आधार पर लगभग 85.8 प्रतिशत लोग कृषि कार्य में लगे हुए है। निर्माण उद्योग में मात्र 3.6% की वृद्धि दर्ज की गयी। जो औद्योगिकरण के निम्न स्तर का परिचायक है। यहाँ कोई मध्यम या वृहद् स्तर के उद्योग नहीं हैं, चीनी मिल इस जिले को औद्योगिक स्वरूप देता है। 9 चीनी मिल हैं जिसमें से अधिकांश बन्द ही है। कुल 21 कारखाने पंजीकृत है, जिसमें से 14 बीमार एवं कार्यहालत में नहीं हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में 3 कारखाने तथा नगरीय क्षेत्रों में 11 कारखाने है।

इस प्रकार औद्योगिक दृष्टि से बहुत ही पिछड़ा हुआ है। जनपद में डिस्टीलरी है। एक औद्योगिक आस्थान स्थापित है जिसमें 2005–06 तक 161 प्लाण्ट स्थापित किये जा चुके हैं। 43 कार्यरत प्लाण्टों में लगभग 3875 लोग रोजगार में लगे है। इसके अतिरिक्त अनेक लघु उद्योग जैसे खादी ग्रामोद्योग से ऋण देकर 8 लघु उद्योग अगरबत्ती, साबुन, चन्दन, पावडर, चटाई, आसनी आदि बनाने के लिए कार्य शुरू किये गये। प्रधानमंत्री रोजगार योजना के तहत भी छोटे–छोटे उद्योग, जैसे बीड़ी, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन, अगरबत्ती, सर्फ, फिनायल, मिट्टी की मूर्तियाँ तथा बर्तन, लकड़ी के सामान, निर्माण सामग्री, एल्युमिनियम की फ्रेमिंग आदि कार्य कर रहे हैं।

सारणी–7

कुशीनगर में औद्योगीकरण की प्रगति

en	1999&2000	2000&01	2001&02
iathd`r dkj[kkus	20	20	21
dk;Zjr dkj[kkus	10	14	6
dkj[kkus ftuesa Jfed dk;Zjr gSa	10	14	6
vkSlr Jfed ,oa deZpkjh dh la[;k	3992	5077	3454
mRiknu ewY; ¼000 :i;s½	1940880	2435162	3036410
cfr Jfed mRiknu ¼:i;s esa½	486192	477656	879100

श्रोतः सांख्यिकी कुशीनगर 2007

ग्रामीण प्रधान क्षेत्र होने के कारण कार्य में संलग्न जनसंख्या का प्रतिशतता दर बहुत कम है। ग्रामीण क्षेत्र में 34.70% तथा नगरीय क्षेत्र में 34.20 प्रतिशत है। कुशीनगर को वास्तव में राज्य का खाद्य फसलों का कटोरा कहा जा सकता है। जहाँ लगभग 80.60 क्षेत्र में कृषि का कार्य होता है।

धान, गेहूँ, गन्ना, दालें, टमाटर, आलू, हल्दी, केला प्रमुख फसलें हैं, जिनका बड़े स्तर पर उत्पादन किया जाता है। वहीं पर निर्माण या उद्योग क्षेत्र में यह दर 3.6% है जबकि 13.9% सेवा क्षेत्र में लगे हुए हैं।

कसया (कुशीनगर) जनपद के केन्द्र में स्थित होने तथा सभी क्षेत्रों से जुड़े होने के कारण व्यापार (बाजार, दुकानें) की अधिकता है। साथ ही 20% लोग निर्माण कार्य में भी जनपद के विभिन्न क्षेत्रों से आकर मजदूरी का कार्य करते है, जिनका प्रतिशत 11.29 है।

8 से 9% लोग लघु उद्योगों में लगे हुए हैं तथा यातायात क्षेत्र में 3.48% लोग लगे हुए हैं। कुशीनगर बाजार होने के कारण यहाँ के लोग खाद्य फसलों के बजाय सब्जी की खेती, डेयरी, गृह उद्योग आदि में लगे हुए हैं।

असंगठित क्षेत्रों में 12% तथा सर्विस सेक्टर में 46.40% लोग लगे हुए हैं। चूँकि यह भाग जनपद का प्रमुख नगरीय क्षेत्र है। अतः यहाँ व्यावसायिक स्वरूप जनपद से भिन्न है, तथा पूरे जनपद के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है। भविष्य में यदि प्रस्तावित योजनाएँ प्रारम्भ होगी तो यह क्षेत्र पूरे जनपद के व्यावसायिक स्वरूप को प्रभावित करेगा। साथ ही रोजगार के अनेक अवसर उत्पन्न होगे जिससे न केवल पूरे जनपद बल्कि राज्य के राजस्व में महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

क्योंकि कुशीनगर पर्यटन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा विकसित क्षेत्र है, जहाँ भविष्य में भी अपार सम्भावनायें हैं। जनपद की कुल आय मेंपर्यटन का महत्वपूर्ण योगदान है, जो विदेशी मुद्रा के रूप में सम्पूर्ण देश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है।

*****

सारणी–8

कुशीनगर की जनसंख्या का व्यावसायिक वर्गीकरण 2001

en	d`ld	d`f"k Jfed	ifjokfjd m|ks	vU; dedj	e[; dedj	lhekUr dedj	dqy dedj
xzkeh.k	203257	155520	20536	83671	548694	409325	956310
uxjh;	2441	2010	2106	20967	27524	5517	33041
;ksx	205698	157530	22642	106638	576508	414843	989351
dl;k ¼dq'khuxj½	14735	7250	812	5991	28788	19108	47896

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चन्दना आर0सी0 (1995) : जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स लुधियाना, पृष्ठ 237
2. लाल हीरा (2002) : जनसंख्या भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, पृष्ठ 199–200.
3. Kumar Anuradha (2002) "Female Libtracy Meeds Boost" the statesman Kolkatta.
4. तिवारी सतीशचन्द्र (2007) : गोरखपुर जनपद में साक्षरता का परिवर्तित प्रतिरूपण्उ0मा0 भूगोल पत्रिका सं0 37 नं0 1, पृष्ठ 61–64.
5. यादव, बी0के0 गुप्ताण फूलचन्द (2007): "जनपद गाजीपुर में साक्षरता प्रतिरूप" उ0मा0 भूगोल पत्रिका सं0 37 नं0 4, पृष्ठ 188.
6. Gupta Garg (2011) "Spatio Temporal Dimention of female literacy in Kannauj District U.P. Uttar Pradesh Geographi cal Jaurnal, Kanpur, Vol. 16, p-49.
7. डा0 कमलेश (2012) : आजमगढ जनपद में (उ0प्र0) में साक्षरता प्रतिरूप, उत्तर प्रदेश मा0भू0 पत्रिका अंक 42, सं0 2, 4 पृष्ठ 35–40.
8. त्रिपाठी केशरीनन्दन (2015) : उत्तर प्रदेश एक दृष्टि में बौद्धिक प्रकाशन, इलाहाबाद।
9. सांख्यिकीय डायरी, उत्तर प्रदेश (2006, 2012) : उत्तर प्रदेश सरकार, अर्थ एवं संख्या प्रभाग, राज्य नियोजन संस्थान, उ0प्र0।